देव संस्कृति विश्वविद्यालय में ज्ञानकुंभ के समापन कार्यक्रम में माननीय राज्यपाल महोदय का उद्‌बोधन

जय हिन्द!

उत्तराखण्ड की पावन धरा पर, देव संस्कृति विश्वविद्यालय शांतिकुंज में आयोजित इस ज्ञानकुंभ में पधारे विद्वत जनों के समक्ष उपस्थित होने पर मुझे अपार प्रसन्नता और गर्व की अनुभूति हो रही है। ज्ञानकुंभ के इस समागम का हिस्सा बनना मेरे लिए भी अत्यंत महत्वपूर्ण एवं गर्व का अवसर है।

देव संस्कृति विश्वविद्यालय के कुलपिता एवं कुलमाता की सूक्ष्म उपस्थित का अनुभव करते हुए विश्वविद्यालय के कुलपति श्री शरद पारधी, प्रति–कुलपति डॉ0 चिन्मय पण्ड्या जी एवं कुलसचिव श्री बलदाऊ देवांगन, समस्त आचार्य, आचार्यागण एवं अध्यनरत विद्यार्थी विश्वविद्यालय के समस्त अधिकारी–कर्मचारी तथा इस ज्ञानकुम्भ में पधारे विभिन्न संस्थानों के सम्माननीय प्राध्यापकगण, कुलपतिगण तथा अन्य प्रतिभागी और पत्रकार बन्धु तथा उपस्थित सभी अतिथियों का अभिनंदन करता हूँ।

उपस्थित विद्वत जनों,

देवभूमि उत्तराखण्ड की पावन धरती प्राचीन समय से ही शिक्षा और अध्यात्म का केंद्र रही है। प्राचीन इतिहास पर नजर डालें तो पता चलता है कि उत्तराखण्ड की पवित्र भूमि से ही देववाणी संस्कृत के माध्यम से ज्ञान और विज्ञान का

प्रसार हुआ था। भगवान वेद व्यास जी ने भी वेदों के ज्ञान को पवित्र बद्रीनाथ धाम से विस्तारित किया था।

भारत वर्ष की सबसे पवित्र भूमि, उत्तराखण्ड को देवभूमि कहा जाता है क्योंकि इस भूमि को न जाने कितने महापुरुषों, संतों ने अपनी तपस्थली बनाया है। इसी प्रकार कुम्भ नगरी हरिद्वार में स्थित शांतिकुंज, जिसे युगऋषि, वेदमूर्ति पं0 श्रीराम शर्मा आचार्य एवं उनकी सहधर्मिणी वंदनीया माता भगवती देवी शर्मा ने अपनी प्रचंड तप ऊर्जा से स्थापित किया था जिसमें जनजागरण, लोक शिक्षण तथा ज्ञानलोक वितरण के कार्य होते हैं।

हमें अति प्रसन्नता है कि इस संस्था के द्वारा निरंतर भारतीय संस्कृति के प्रचार–प्रसार का कार्य किया जा रहा है। इस ज्ञानकुंभ में पधारे हमारे प्राध्यापकगण और सभी विद्वानों के द्वारा दो दिन तक ज्ञान के विभिन्न पहलुओं पर मंथन किया गया।

मेरे संज्ञान में लाया गया है कि इस ज्ञान कुंभ में विभिन्न सत्र आयोजित किए गए, जिनमें शिक्षण कार्यशाला, विद्वत गोष्ठियां, प्रेरणादायक व्याख्यान आदि समावेश किया गया है। मुझे विश्ववास है कि शिक्षा, संस्कृति, और आध्यात्मिकता के प्रचार–प्रसार के उद्देश्य से आयोजित इस ज्ञान कुंभ में किए गए चिंतन और मंथन के समाज में सकारात्मक परिवर्तन देखने को मिलेंगे।

देव संस्कृति विश्वविद्यालय शिक्षा और संस्कृति के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है। यह अच्छी बात है कि इसका उद्देश्य केवल अकादमिक विकास ही नहीं, बल्कि समाज को नैतिक और सांस्कृतिक दृष्टिकोण से सशक्त बनाना भी है। मैं मानता हूँ कि ज्ञान कुंभ इस उद्देश्य को प्राप्त करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

विद्वत जनों,

मेरा मानना है कि शिक्षा ही राष्ट्र के विकास और प्रगति का मूल आधार है। हमें शिक्षा को रोजगार योग्य और आधुनिक समय की चुनौतियों के अनुकूल बनाना आवश्यक है। डिजिटल शिक्षा, प्रौद्योगिकी और नवाचार के माध्यम से हर छात्र को समान अवसर मिले, ताकि भारत एक ज्ञान आधारित समाज बने और विश्व में अपनी सशक्त पहचान बनाए।

मेरी सोच है कि शिक्षा केवल ज्ञान और कौशल का माध्यम नहीं होनी चाहिए, बल्कि उसमें नैतिकता, सामाजिक जिम्मेदारी और व्यक्तिगत मूल्यों का भी समावेश होना चाहिए। जिससे विद्यार्थी न केवल अच्छे पेशेवर बनें, बल्कि जिम्मेदार नागरिक भी बन सकें। शिक्षा का उद्देश्य विद्यार्थियों में चरित्र निर्माण, अनुशासन, ईमानदारी, और सेवा भाव को बढ़ावा देना होना चाहिए, जिससे वे समाज और देश की उन्नति में योगदान कर सकें।

साथियों,

वेद, पुराण, उपनिषद और अन्य प्राचीन भारतीय ग्रंथ हमारी सांस्कृतिक और आध्यात्मिक धरोहर हैं। ये ग्रंथ न केवल आध्यात्मिक ज्ञान के स्रोत हैं, बल्कि मानवता के कल्याण और समग्र विकास के मार्गदर्शक भी हैं। इन ग्रंथों में निहित जीवन मूल्यों और चिंतन को आधुनिक युग में अपनाकर, व्यक्तिगत और सामाजिक उन्नति संभव है। आज के समय में इन प्राचीन ग्रंथों का अध्ययन आवश्यक है, ताकि भारतीय युवा अपनी जड़ों से जुड़ सकें।

मेरा मानना है कि प्लास्टिक मुक्त भारत और ग्रीन एनर्जी जैसे उपाय पर्यावरण की रक्षा के लिए महत्वपूर्ण हैं। आज देशभर में जल संरक्षण, वृक्षारोपण और नवीकरणीय ऊर्जा को बढ़ावा दिया जा रहा है। स्वच्छ वातावरण और स्थिरता न केवल हमारी वर्तमान पीढ़ी के लिए, बल्कि भविष्य की पीढ़ियों के लिए भी आवश्यक है।

साथियों,

ये शिक्षा ही तो है जिसमें देश को सफल बनाने, देश का भाग्य बदलने की ताकत होती है। आज 21वीं सदी का भारत जिन लक्ष्यों को लेकर आगे बढ़ रहा है, उसमें हमारी शिक्षा व्यवस्था का बहुत ज्यादा महत्व है।

हमारी राष्ट्रीय शिक्षा नीति प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी का, बेहतर शिक्षा की दिशा में एक दूरदर्शी प्रयास है जिसके अच्छे परिणाम हमें शीघ्र ही दिखाई देंगे। इस शिक्षा नीति के तहत समग्र और व्यावहारिक शिक्षा पर ध्यान केंद्रित किया गया है, जिससे छात्रों में रचनात्मकता, नवाचार और कौशल विकास हो सके।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति की प्राथमिकता है कि भारत के हर युवा को शिक्षा के समान अवसर मिले, सबको समान शिक्षा मिले। समान शिक्षा का मतलब है– शिक्षा के साथ–साथ संसाधनों तक समान पहुंच। हर बच्चे की समझ और चॉइस के हिसाब से उसे विकल्प मिले। स्थान, वर्ग, क्षेत्र के कारण बच्चे शिक्षा से वंचित न रहें, इसलिए NEP का विजन और देश का प्रयास ये है कि गांव, शहर, अमीर, गरीब हर वर्ग के युवाओं को एक जैसा अवसर मिले।

साथियों,

अब समय आने वाला है जब भारत की क्षमता का मुकाबला करना आसान नहीं होगा। आज दुनिया जानती है कि जब सॉफ्टवेयर टेक्नोलॉजी की बात आएगी, तो भविष्य भारत का है, जब स्पेस टेक की बात होगी तो भारत की क्षमता का मुकाबला आसान नहीं है। जब डिफेंस टेक्नोलॉजी की बात होगी तो भारत का ‘लो कॉस्ट’ और ‘बेस्ट क्वालिटी’ का मॉडल ही हिट होगा।

भारत भी जैसे–जैसे मजबूत हो रहा है, भारत की पहचान और परम्पराओं में भी दुनिया की दिलचस्पी बढ़ रही है। हमें इस बदलाव को विश्व की अपेक्षा के तौर पर लेना होगा। योग, आयुर्वेद, कला, साहित्य और संस्कृति के क्षेत्र में भविष्य की अपार संभावनाएं जुड़ी हैं, हमें हमारी नई पीढ़ी को इनसे परिचित करवाना होगा।

आजादी के अमृत महोत्सव में, आने वाले इन वर्षों में हमें ऊर्जा से भरी एक युवा पीढ़ी का निर्माण करना है, जो गुलामी की मानसिकता से मुक्त हो, जो नए–नए इनोवेशन के लिए लालायित हो, जो साइंस से लेकर स्पोर्ट्स तक हर क्षेत्र में भारत का नाम आगे बढ़ाएं, जो 21वीं सदी के भारत की आवश्यकताओं को समझते हुए अपना सामर्थ्य बढ़ाए, जो कर्तव्य बोध से भरी हुई हो, अपने दायित्व को जानती और समझती हो, इसमें राष्ट्रीय शिक्षा नीति की बहुत बड़ी भूमिका है।

आप सभी विद्वानों ने जो भी मंथन किया है उससे अवश्य ही युवा लाभान्वित होंगे। मुझे विश्वास है कि इस कार्यक्रम में जो विचार–विमर्श हुआ है उसके अंश शिक्षा जगत में नहीं बल्कि समाज में भी देखने को मिलेंगे।

अंत में देव संस्कृति विश्वविद्यालय एवं शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास के समस्त पदाधिकारियों को मेरी हार्दिक शुभकामनाएं! देवभूमि में इस प्रकार के कार्यक्रम आयोजित होते रहेंगे तो निश्चित ही देव भूमि के स्वरूप में बदलाव अवश्य दिखेंगे।

जय हिन्द!